P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-8* (Part-1) November- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

परिवार–विघटन और शिवमूर्ति की केशर

सारांश

समकालीन हिन्दी कहानीकारों में शिवमूर्ति श्रेष्ठ हस्ताक्षर है। अपने लेखन के द्वारा शिवमूर्ति समकालीन कहानीकारों में विशिष्ट पहचान बनाते है तथा अपनी रचनाओं के मार्फत से वह भारतीय गाँवों की यथार्थ तस्वीर प्रस्तुत करते है। सामाजिक, राजनीतिक तथा आर्थिक स्तर पर ग्रामीण समाज का पिछाड़ापन, अभाव, गरीबी, शोषण, भ्रष्टाचार, वहाँ विराजमान स्त्री शोषण, दलित–शोषण, किसान–शोषण शिवमूर्ति के रचनाभूमि को मूल आधार व प्राण है। जिसके बलबूते शिवमूर्ति अपनी रचनात्मक क्षमता को प्रगतिशील धार देते हैं। 'केशर कस्तूरी' इनका कहानी–संग्रह भारतीय गाँवों के स्त्रियों की यथार्थ अभिव्यक्ति है जिसमें परिवार विघटन की समस्या को साफ–साफ देखा जा सकता है।

मुख्य शब्द : भूमंडलीकरण, आर्थिक–संकट,परिवार–विघटन,स्त्री–शोषण।

सुमन कुमारी बरनवाल
शोध छात्रा,
हिन्दी विभाग,
विश्व भारती शान्ति निकेतन,
पश्चिम बर्द्धमान

प्रस्तावना

शिवमूर्ति ग्रामीण जनजीवन को आधार बनानेवाले समकालीन कथाकारों में सबसे प्रखर और प्रगतिशील कथाकार हैं उन्होंने अपने ग्रामीण स्त्री पात्रों की पीड़ा, यातना, दुःख, निराशा, अभाव, गरीबी विपन्नता को जिस प्रभावात्मकता के साथ चित्रित किया है, वह अन्यत्र दुर्लभ है।

अध्ययन का उद्देश्य

कथा लेखन पर ध्यान दें तो प्रेमचंद और रेणु के समय, समाज,विचारधारा से भिन्न शिवमूर्ति की नायिका भिन्न परिस्थिति में रची–बसी हैं लेकिन ग्रामीण समाज को देखने से यह साफ पता चलता है कि तब और अब में कोई विशेष अंतर नहीं है। बस भूमंडलीकरण ने वहाँ अपना सिक्का जमा लिया है। आज भी वहाँ गरीबी, विपन्नता आर्थिक तंगी,पिछड़ापन फन काढ़े खड़ा है और इसमें सबसे अधिक शोषित,अपमानित और तिरस्कृत होने का कोई दंश झेल रहा तो वह स्त्री है। चाहे वह सवर्ण हो या फिर दलित स्त्री। कहीं न कहीं सामाजिक और आर्थिक स्तर पर यही गरीबी,विपन्नता वह मूल कारण है कि आज भी भारतीय गाँवों में परिवार–विघटन की समस्या आम हो गई है। सब अपने–अपने हिस्से व बँटवारे के पीछे पड़े है जिसमे मानवीयता क्षीण होती जा रही है तथा इसी को उद्घाटित करना इस आलेख का उद्देश्य है।

साहित्यावलोकन

शिवमूर्ति ग्रामीण संवेदना के कथाकार है। उनके पास ग्रामीण संवेदनाओं और भावनाओं का इतना व्यापक अनुभव संसार है कि वह प्रत्येक पात्रो को जिस रूप में कलमबद्ध करते हैं कि मानो वह उसके अंतर्मन को बखूबी जानते हों,जिससे वर्तमान परिदृश्य अपनी यथार्थता में अभिव्यक्त होता है। शिवमूर्ति के ऊपर स्वतंत्र कोई आलोचनात्मक पुस्तक अभी तक किसी आलोचक के द्वारा लिख कर नहीं आयी है पर कुछ मंच, लमही, संवेद,इनसाइड इंडिया आदि पत्रिकाओं का विशेषांक उन पर स्वतंत्र रूप में आया है। जिसमें शिवमूर्ति के समस्त कथा साहित्य को बड़ी गंभीरता के साथ विवेचित व विश्लेषित कर वर्तमान ग्रामीण समाज की वास्तविकता से भारतीय समाज को परिचित कराने का अथक प्रयास जरुर किया गया है।

शिवमूर्ति का कहानी संग्रह 'केशर–कस्तूरी' अपने आप में विशिष्ट रचना है। शिवमूर्ति की कहानी केशर– कस्तूरी में केशर गरीबी और अभाव के बीच जीवन जीते हुए अपनी अस्मिता के लिए लगातार संघर्ष करती है। यह कहना अन्योक्ति न होगा कि वह पूरी स्त्री समाज का प्रतिनिधित्व करती है। परिवार–विघटन की प्रक्रिया के तहत स्त्री जीवन की सर्वाधिक महत्वपूर्ण आवश्यकता शिक्षा है। इसके अभाव में स्त्री जीवन अंधकारमय,निरर्थक और पराश्रित होता है। शिक्षा प्राप्ति के संदर्भ में गांव की बच्चियों का आज भी शिक्षा से वंचित होना उनकी अस्मिता को खतरे में डालता है। शिवमूर्ति ने केशर कस्तूरी कहानी में केशर के माध्यम से स्त्री शिक्षा के प्रश्न को बखूबी उठाया है

जो वर्तमान परिप्रेक्ष्य में समीचीन प्रतीत होता है। केशर में शिक्षा पाने की प्रबल इच्छाशक्ति के कारण उसके मौसा की मध्यक्षता से उसका विवाह तीन साल के लिए टल जाता है और उसे आगे पढ़ने का सुअवसर दिया जाता है, किंतु आठवीं के आगे पढ़ने के लिए केशर के बप्पा राजी नहीं होते हैं, क्योंकि उनका तर्क था–" तीन मील दूर के स्कूल में सयानी लड़की को अकेले पढ़ने भेजना निरापद नहीं है। गाँव में जातीय विद्वेष दिनों दिन इतना प्रबल हो रहा है कि कभी कुछ अघटनीय घट सकता है।"[1] पिता की संकीर्ण मानसिकता के कारण केशर की पढ़ाई रुक जाती है। सच तो यह है कि पुरुष स्त्रियों को उतना ही शिक्षित और ज्ञान देना चाहता है जितना उसके स्वार्थ में बाधक न हो। ग्रामीण समाज को इस दकियानूसी विचारधारा से निकलना होगा। तभी स्त्री आत्मनिर्भर,स्वतंत्र बन पायेगी और गाँवों का विकास आसान हो जायेगा। स्त्रियों के लिए 'पढ़ना कालकूट और पुरुष के लिए पीयूष की घूट' आज भी मानो ऐसी उक्तियां प्रचलित है। परिवार को त्रासदीपूर्ण स्थितियों से बचाने हेतु स्त्री शिक्षा अनिवार्य है।

पितृसत्तात्मक समाज में विवाह स्त्री जीवन की अनिवार्यता से जोड़ा जाता है। विवाह का उद्देश्य स्त्री के लिए आर्थिक, सामाजिक सुरक्षा, संबंधों की वैधानिक मान्यता और सामाजिक सम्मान की सार्थकता है। समाज में हमेशा स्त्री को एक वस्तु के रूप में माना गया है। केशर को पराई संपत्ति मानना उसे पराया बनाता है जिसकी रक्षा के दायित्व से पिता मुक्ति के लिए आठवीं पास करते ही जल्द से जल्द उसका विवाह हाई स्कूल में पढ़ने वाले लड़के से करा देते हैं,ऐसे में परिवार टूटने लगता है। विवाह करने में उसकी रजामंदी भी नहीं ली जाती हैं यह ग्रामीण समाज का ही सच नही है बल्कि शहरों का भी यही यथार्थ है। केशर की मान्यता है–" जिस लड़के का बाप बहुत टालता है उसकी शादी भी हाई स्कूल पास करते करते हो जाती है। ऐसे में बेटी को कुंवारी रखने पर बाद में लड़के कहां मिलेंगे ? और कुंवारी रखने का उद्देश्य भी क्या है ? लड़की के भाग्य में होगा तो वही लड़का पढ़ लिखकर कहीं हिल्ले से लग जाएगा।"[2] पितृसत्तात्मक और पुरुष वर्चस्व समाज में स्त्री का पालन पोषण निरीह जानवर की भांति किया जाता है। ग्रामीण समाज में स्त्रियों का विवाह जल्दबाजी में कर दिया जाता है,पर यह नहीं सोचा जाता कि यदि सही घर, परिवार नहीं मिला तो बेटी का भविष्य क्या होगा? पितृसत्तात्मक समाज में स्त्री की योग्यता और गुणवत्ता का कोई महत्व नहीं, उसे घर–बाहर सभी क्षेत्रों में संदेह से देखा जाता है जो उसके आत्मविश्वास के लिए विष है। पुरुष प्रधान समाज में स्त्री की गुणवत्ता खतरे में नजर आती है। पुरुष प्रतिपक्षी के रूप में निरंतर स्त्री की अस्मिता पर ही सीधे वार करता है,जहां स्त्री असुरक्षित महसूस करती है। लेकिन अपनी गुणवत्ता में अंतर नहीं आने देती।

शिवमूर्ति ने केशर के माध्यम से स्त्री की योग्यता और गुणवत्ता को प्रस्तुत किया गया है। केशर हंसमुख और व्यवहारिक होने के साथ–साथ अपूर्व सौंदर्य युक्त युवती थी, किंतु विवाह के पश्चात् केशर अकेले ही घर–गृहस्थी का काम संभालने के साथ आधी रात तक सिलाई कर अपना घर चलाती है। इसी कारण वह जेठ–जेठानी की नजरों में चुभती है। केशर की सास कहती है– " पतोहू बड़ी मरदाना औरत है ... दिन भर घर के 'भरमजाल' से जूझने के बाद आधी–आधी रात तक सिलाई में आंख फोड़ती है... किसी तरह नोंन–तेल भर का निकालती है तो देखकर जेठ–जेठानी की आंखें फूट फूटती हैं। जेठ अकसर लड़ता है। झूठ–मूठ कलंक लगाता है कि सिलाई तो बहाना है दुनिया भर के लुच्चे शोहदे,छोटे बड़ों के लोंड़े–लपाड़े अँधेरा होते ही दुवार पर मंडराने लगते है।"[3] स्त्री पर झूठा दोषारोपण परिवार–विघटन में अहम भूमिका निभाता है।

केशर के दुखद जीवन के चित्रण में पुरुष वर्चस्व की मानसिकता को प्रस्तुत किया गया है। कम उम्र में विवाह हो जाने के कारण वह पढ़ लिख नहीं पाती। साथ ही उसके ऊपर पति और परिवार की जिम्मेवारी भी आ गई है जिसके तले उसकी जिंदगी नरक बन जाती है। वह अपना घर संभालती है और आधी रात तक सिलाई कर विपन्नता में भी अपना जीवन व्यतीत करती है, पर किसी से कुछ नहीं कहती। अवैध संबंध का आरोप लगाकर केशर को बदनाम किया जाता है। लेकिन जब उसके पिता का केशर के प्रति अविश्वास प्रकट कर उसे गलत राह पर न चलने की हिदायत देते हैं, तब वह मर्माहत हो जाती है– " सुना है, तुम्हारे जेठ–जेठानी उलटे सीधे कलंक लगाते हैं। तुम तो खुद ही समझदार हो बिटिया। जाने–अनजाने ऐसी कोई बात नहीं होनी चाहिए कि ....।" [4] जब आपसी संबंधों में स्त्री के प्रति अविश्वास प्रकट होने लगता है तो परिवार बिखराव की स्थिति में आ जाता है।

केशर के माध्यम से स्त्री शोषण परिवार विघटन का एक कारण बनता है। दांपत्य जीवन में सबसे नाजुक संबंध पति पत्नी का होता है। विवाहोपरांत सौन्दर्यशालिनी, गृहस्थी संभालते हुए जीविका उपार्जन करने वाली पत्नी के बावजूद केशर का पति उस पर लांछन लगाकर प्रताड़ित करता है। जिसमें वह पल– पल घुटती–पिसती है। वह कहता है–" मैं खानदान की पगड़ी उछालते नहीं देख सकता। किस–किससे रार मोल लेता फिरूँ ? बहुत–बहुत सिलाई–कढ़ाई वाली देखा है। ई धंधा करना है तो बाजार में जाकर दुकान खोलें।"5 दांपत्य जीवन की बुनियाद विश्वास के आधार स्तम्भ पर टिका होता है। किसी कारण वश कोई कटुता आपस में पैदा हो जाती है तो जीवन निरर्थक साबित हो जाता है।

कहानी में परिवार–विघटन स्त्री जीवन के कारूणिक सत्य और परिवर्तन के साथ रूपायित हुआ है। चंचल और हंसमुख केशर विवाहोपरांत गरीबी और विपन्नता की शिकार होकर एक तपस्विनी की भांति लगती है, ऐसा लगता है जैसे उसे कितने तीखे अनुभव और निर्मम यथार्थ को झेला है और स्वयं को सांसारिकता की आग में तपा कर नई केशर को जन्म दिया है–" मेरी सोच में अपनी देह न गलाइएगा। जितने दिन आपकी बारी–फुलवारी में खेलना–खाना बदा था, खेले–खाए। अब मेरा हिस्सा मुझे 'अलगिया' मिल गया है। तो जैसे भी है, उसे भोगना होगा,खेना होगा।"6 पारिवारिक–विघटन स्त्री

जीवन की सबसे बड़ी त्रासदीपूर्ण स्थिति है जिसमे यदि सबसे ज्यादा उत्पीड़ित होती हैं तो वों स्त्रियाँ। पुरुष वर्चस्व आदि समाज में स्त्री को स्त्री होने की जो सौगात मिलती है वह हैं पीड़ाए, तिरस्कार और यातना। विषम परिस्थिति में जीवन यापन के लिए पुरुष के साथ स्त्री श्रम करके, कंधे से कंधा मिलाकर दो वक्त की रोटी के लिए खटती है पर इसके बदले उसे पति द्वारा इनाम मिलता है बदचलनी का दाग। पुरुष समाज में स्त्रियाँ आज भी अपनी महत्वाकांक्षाओं,इच्छाओं का गला घोटने में तनिक भी संकोच नहीं करती पर पुरुष इतना निर्दयी होता है कि अपने स्वार्थपूर्ति के लिए वह उसके बलिदान को तुच्छ मानता है। पुरुष समाज में आज भी स्त्रियां चारदीवारी के भीतर कैद घुटन और संत्रास भरा जीवन जीने को बाध्य हैं। स्त्री अपने घर–परिवार को हर सुख, हर खुशी देने को तत्पर रहती है। वह इस प्रयास में सफल भी होती है। पुरुष समाज उसकी सफलता को अनेक चरित्र और दुराचार से जोड़ता है जो उसके आत्मसम्मान के लिए विष का काम करती है। आत्मसम्मान की रक्षा ही परिवार–विघटन की ओर अग्रसर करता है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि परिवार–विघटन की प्रक्रिया तहत शिक्षा, बाल – विवाह, आर्थिक विपन्नता,असमानता, रुढ़िग्रस्त मानसिकता,पुरुष वर्चस्ववादी नीति ही वह मूल कारण है जो समाज को अलगाव, अमानवीय और संवेदनहीन बनता जा रहा है। उदारीकरण के समय में यह एक विकराल रूप धारण कर चुका है। शहरी और ग्रामीण समाज इस उदारता में निरंतर संघर्ष कर रहा है। निस्संदेह आने वाले समय के लिए हमें यह सुफल नहीं दे सकता है यह मन लेना होगा। परिवार–विघटन न केवल समाज के लिए कोढ़ है बल्कि राष्ट्र के लिए भी अनिष्टकारी है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *शिवमूर्ति, केशर–कस्तूरी,राधाकृष्ण प्रकाशन,नई दिल्ली, 2007, पृ– 149*
2. *शिवमूर्ति, केशर–कस्तूरी,राधाकृष्ण प्रकाशन,नई दिल्ली, 2007, पृ– 149*
3. *शिवमूर्ति, केशर–कस्तूरी,राधाकृष्ण प्रकाशन,नई दिल्ली, 2007, पृ– 161*
4. *शिवमूर्ति, केशर–कस्तूरी,राधाकृष्ण प्रकाशन,नई दिल्ली, 2007, पृ– 163*
5. *शिवमूर्ति, केशर–कस्तूरी,राधाकृष्ण प्रकाशन,नई दिल्ली, 2007, पृ– 161*
6. *शिवमूर्ति, केशर–कस्तूरी,राधाकृष्ण प्रकाशन,नई दिल्ली, 2007, पृ– 162*